om 1 Delhi Final 1_Page 1 and 2 18/03/2015 10:57 Page 6

कितना सुन्दर व महान है हमारा परिवार...

-ब्र.कु. सूर्य, माउंट आबू

जनकपुर-नेपाल। महाशिवरात्रि कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. गंगे दीदी, ब्र.कु. जगदीश तथा अतिथीगण।

जयपुर-राजापार्क। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करने के पश्चात् समूह चित्र में मेयर निर्मल नाहटा, ब्र.कु. रामप्रकाश, ब्र.कु. पूनम तथा अन्य।

जयपुर-सोडाला। शिवजयन्ती महोत्सव में आये गलतापीठाधीश्वर जगतगुरु अनंत श्री विभूषित श्री स्वामी सम्पतकुमार अवधेशाचार्य जी महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. स्नेह। साथ हैं ब्र.कु. मंजू तथा अन्य।

हिसार-हरियाणा। विधायक डॉ. कमल गुप्ता को ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. वंदना।

गोण्डा-उ.प्र.। किसान सशक्तिकरण अभियान कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए जिला अधिकारी अजय कुमार उपाध्याय, ब्र.कु. दिव्या, ब्र.कु. मीता तथा अन्य।

फाजिलका-पंजाब। ज्ञानचर्चा के पश्चात् उद्योगपति महावीर मोदी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रिया।

स्वयं भगवान का परिवार, जिनकी माँ स्वयं ब्रह्मा... जिनकी बहन जगदम्बा, दुर्गा, महाकाली, सरस्वती और अन्य अनेक पूजनीय देवियां। ये उन्हीं देवी-देवताओं का परिवार है जिसमें श्रीकृष्ण व श्रीराम थे, श्रीलक्ष्मी व श्री नारायण थे, सीता व सावित्री थीं। अब पुन: परमपिता शिव बाबा ने अपने परिवार को मिलाया। आत्माएं जन्म लेते-लेते न जाने कहाँ-कहाँ चली गईं। उन्होंने आकर सबको इकट्ठा किया। वे हमारे मात-पिता, शिवबाबा व ब्रह्मा अपने इस महान परिवार को बहुत प्यार करते हैं और वे स्वयं इसका श्रृंगार कर रहे हैं।

दस लाख महानात्माओं का है ये ब्राह्मण परिवार:- इस परिवार में विश्व की सबसे महान आत्माएं भी हैं और वे विजयी 100 रत्न भी जिनकी याद से ही भक्तों के कलह क्लेश मिट जाते हैं। ये ईश्वरीय परिवार सबसे रॉयल भी है क्योंकि इसमें देव कुल की महानात्मायें हैं। इस परिवार में

सभी के चेहरे पवित्रता की दिव्यता से चमकते हैं, सन्तुष्टता की सच्ची शांति से शीतल तरंगे फैलाते हैं और ज्ञान-प्रकाश से जगमगाते हैं।

जो भी इस परिवार में आता है, प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। सबका जन्म-जन्म का नाता है, सब अपने ही हैं। ये तो केवल कर्मों के निगेटिव हिसाब-किताब के कारण कुछ भिन्नता दिखाई देती है। यही एक अद्भुत परिवार है जिसमें सभी महान हैं, सभी पवित्र हैं, सभी ईश्वरीय वरदानों से व ईश्वरीय शक्तियों से सम्पन्न हैं। ऐसा परिवार चारो युग में, सम्पूर्ण विश्व में कहीं भी दिखाई नहीं देगा। परिवार तो अच्छे भी होंगे, सतयुग में तो सारा विश्व ही एक परिवार होगा परन्तु भगवान नहीं होगा।

इस महान् परिवार के हर सदस्य में हमें सम्पूर्ण निश्चय हो कि ये महान् हैं, ये ही आत्माएं माया को जीतेंगी, इन्होंने ही भगवान के दिल को भी जीता है। ये हमारे हैं और हम सब ही जन्म-जन्म साथ रहेंगे।

इस विशाल परिवार में हम भी सुखी रहें व दूसरे भी हमारे साथ संतुष्ट रहें - इसका ही महत्व है। ये बड़ा परिवार हमारी साधनाओं में सहायक हो बाधक नहीं। जैसा ये महान परिवार है, वैसे ही इसमें महान वायब्रेशन्स व नि:स्वार्थ प्यार रहे - ऐसी ही कुछ चर्चाएं यहां प्रस्तुत हैं -

परिवार के बड़े, बड़ी दिल वाले हों - प्रत्येक स्थान पर इस परिवार में पूर्वज आत्माएं हैं, जो एक-एक संगठन के हेड हैं। संगठन के मुखिया की विशालता ही सबके लिए कल्याणकारी होती है। उनकी शुभ भावना, सबको सिखाने की कामना व सबको आगे बढ़ाने की भावना इस परिवार को अलौकिक बना देती है। बड़ों को सबकुछ समाना होता है, ज़्यादा सहन करना होता है और सबको प्यार देना होता है। व भी परिवार के मात-पिता सम ही होते हैं, उनकी उदारता ही परिवार को निर्विघ्न बनाती है। हमारे महायज्ञ की प्रमुख रहीं दादी प्रकाशमणि को सबने उदार स्वरूप में देखा, उनके अन्दर भावना रहती थी कि उनके परिवार में सब संतुष्ट रहें। वे अपने साथियों को कहा करती थीं - जितना बड़ा दिल रखोगे, उतना ही ज़्यादा आयेगा।

बड़ी दिल वाले छोटी-छोटी चीज़ों के लिए दूसरों को परेशान नहीं करेंगे। याद रखना चाहिए आपके इस दैवी परिवार में न जाने कौन अति भाग्यशाली आत्मा हो, जिसके भाग्य से ही सबकुछ आ रहा हो। यह सिद्धांत भी याद रखना चाहिए कि धन सम्पत्ति में एक प्रवाह है, इसकी गति को रोकना नहीं चाहिए अन्यथा इसका आना ही रुक जायेगा। जो आ रहा है, उसे सेवा में व सबको सुख देने में लगाते चलो, बढ़ता चलेगा। बड़ी दिल से सबको संतुष्ट करते चलो, इन महानात्माओं की दुआओं से भण्डारे भरपूर रहेंगे।

परिवार में कैसी दृष्टि हो? - हम जानते हैं भगवान ने आकर पुन: उन्हीं महानात्माओं का आह्वान किया है जो देवी-देवता थे। हम सबको इस नज़र से देखें कि ये देव-कुल की महान आत्माएं हैं, पुन: देवता बनने आये हैं। याद रखना है जिस दृष्टिकोण से हम दूसरों को देखेंगे, उसी दृष्टिकोण से वे हमें देखेंगे। इस दृष्टि से हमारे संगठन के वायब्रेशन्स अति अलौकिक व प्रेम-युक्त हो जायेंगे। इसके अतिरिक्त किसी के अवगुण नहीं देखने हैं परन्तु यदि अवगुण दिखाई भी दें तो एक तो उन्हें चित्त पर नहीं रखना है, दूसरा यह संकल्प करना है कि ये इन्हें छोड़ने के लिए ही तो यहां आये हैं। इससे घृणा नहीं, सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। तो बड़े छोटे सबका कर्त्तव्य है कि सबके प्रति ऐसी ही दृष्टि रखें व दृष्टि रखना सिखायें।

वाराणसी-श्रीराम नगर। राष्ट्रीय किसान मेला एवं सब्जी प्रदर्शनी में डॉ. गौतम कल्लु,पूर्व कुलपति, जवाहर लाल नेहरु कृषि विश्व विद्यालय,म.प्र., पूर्व उप महा-निदेशक बागवानी,भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का स्वागत करते हुए ब्र.कु. सरोज।

सुख देने की व आगे बढ़ाने की भावना हो - परिवार में यदि मनुष्य एक दूसरे को सुख देने की भावना रखे तो अति सुन्दर होगा। पहले यह भावना बढ़ानी होगी कि ये हमारा परिवार है। हमें परिवार में सबको आगे बढ़ाना है।

जो दूसरों को आगे बढ़ता देख प्रसन्न हो, वही बड़ी दिल वाला है परन्तु जो दूसरों को आगे बढ़ता देख परेशान हो जाए, यह सोचकर कि अब हमारा क्या होगा, कहीं ये हमारी सीट न हथिया ले या अब तो इसका नाम हो जायेगा, हमें कोई नहीं पूछेगा, सब इसकी ही तरफ चले जायेंगे - ये विचार परिवार में रौनक समाप्त कर देते हैं।

वही परिवार उमंग उत्साह में रहता है जहां हर व्यक्ति दूसरे को सिखाये और सिखाकर उन्हें योग्य बनाये। और सीखने वाले को भी सिखाने वाले का कृतज्ञ ही रहना चाहिए। सिखाने वाले निमित्त भाव से सिखाकर स्वयं को इस भावना से भी मुक्त करें कि मैंने इन्हें सिखाया। नम्रता ही हमारे इस महान परिवार की शोभा है।

राज्य स्थापित हो रहा है, संस्कार भिन्न-भिन्न हैं - परमात्मा ही धर्म व राज्य दोनों की स्थापना करते हैं। राज्य स्थापना में कोई राजा कोई रॉयल फैमिली मेम्बर व कोई प्रजा आदि बनेंगे। सारा संसार ही विविधता से भरपूर होगा। इसलिए आपके साथ जो आत्माएं हैं वे क्या पद पाने वाली हैं - ये उनके पुरुषार्थ व ज्ञान योग पर निर्भर करेगा। कोई कड़े संस्कार वाली आत्मा भी आपके मध्य होगी, तो कोई कटु बोलने वाली भी, कोई सुस्त कोई चुस्त, कोई बहुत बुद्धिमान, कोई साधारण। इन सब भिन्नता को स्वीकार कर लें और मान लें कि इनके बीच में रहकर ही हमें सेवा करनी है व श्रेष्ठ पुरुषार्थ करना है।

इसके लिए सहज भाव से एक दूसरे के साथ रहें, उनकी बुद्धि व संस्कारों को समझकर ही उनके साथ व्यवहार में आयें ताकि न वे डिस्टर्ब हों और न हम। हमारे संस्कार जितने सरल होंगे, दूसरे भी हमसे उतने ही सरल हो जायेंगे। हमारे ऊपर है कि हम अपने संगठन में उमंग उत्साह व श्रेष्ठ पुरुषार्थ का माहौल बनाकर रखें।

तो आओ हम सब मिलकर भगवान के इस परिवार को आदर्श बनायें। बातों को जल्दी-जल्दी समाप्त करें, परिवार में रिगेटिविटी न बढ़ने दें और ऐसा सुखद वातावरण बनायें ताकि इसकी संख्या बढ़ती ही चले।